Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

आचार्य रामानुज दर्शन में अज्ञान का प्रत्याख्यान

डॉ सुरेंद्र कुमार तोसावड़ा

शोधकर्ता
संस्कृतविभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

शोधसार–
आचार्य रामानुज के अनुसार अद्वैत वेदान्त की मान्यता है अज्ञान भाव रूप है | मायावादियों के द्वारा अज्ञान को भाव रूप मानने के लिए तर्क देना ठीक वैसा ही असम्भव है जैसा कोई पशु आकाश का पागुर जुगाली, चर्वित चर्वण करे भाव रूप में अज्ञान को मानना ज्ञानाभाव के रूप में मानने के ही बराबर है |

भूमिका -
आचार्य रामानुज ने अज्ञान का खण्डन करते हुए श्री भाष्य में अपना मत प्रस्तुत किया है –

किञ्चित आश्रयानुपपति– अविद्या का आश्रय अनुपपन्न है | जीव व ब्रह्म दोनों अविद्या का आश्रय नहीं हो सकते जीवतो खुद एक अविद्या – कल्पित है |

"न तावत् जीवमाश्रित्य अविद्या परिकल्पितत्वाज्जीव भावस्था"[1]

अविद्या जिस वजह से आभासित होती है वह अपने का कारण आश्रय नहीं हो सकती | अगर माने तो अविद्या की उत्पत्ति भी जीव के द्वारा ही होती है | इसलिए दोनों एक दुसरे पर ही आश्रित हैं | जीव की कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है क्योंकि वह खुद अकल्पित ब्रह्म है |

अतः अविद्या का आश्रय जीव नहीं हो सकता किन्तु ब्रह्म को भी अविद्या का आश्रय स्वीकार नहीं किया जा सकता | क्योंकि वह स्वयं प्रकाश ज्ञान स्वरूप होने से अविद्या विरोधि है | "नापि ब्रह्मा श्रित्य, तस्म स्वयं प्रकाश ज्ञान स्वरूपत्वेना विद्याविरोधत्वात् |" (श्रीभाष्य)

प्रकाश को यदि अविद्या का आश्रय माना जायेगा तो वह सत्य व शुद्ध रूप में नहीं रहता है | क्योंकि अविद्या प्रकाशविरोधि और ब्रह्मज्ञानस्वरूप है | दर्शनशास्त्र के अनुसार अद्वैतवादी मायावादी के आवरण शक्ति ढकी हुई रहने के कारण ही जीव अपने ब्रह्म स्वरूप के ज्ञान में असमर्थ रहता है | उसकी क्रिया की प्रतिक्रिया में रामानुज अपने दर्शन में कहते हैं प्रथम तो अविद्या का आवरण करना ही असम्भव है क्योंकि खुद प्रकाश चैतन्य किसी आवरण का विषय नहीं हो सकता और यदि प्रकाश एक स्वरूप ब्रह्म को अविद्या की तरह मान लें तो इसका वास्तविक स्वरूप ही नष्ट हो जायेगा क्योंकि अविद्या के द्वारा उस प्रकाश के रूप ब्रह्म के प्रकार के प्रति अवरोध का पर्याय होगा जिससे वर्तमान ज्ञान का विनाश और आगामी प्रकाश की उत्पत्ति पर प्रतिबन्ध |

[1]श्रीभाष्य, अविद्याभंग

"अविद्या प्रकाशैकस्वरूपं ब्रह्मतिरोहितमिति वदता स्वरूप नाश एव तस्य स्यात् | प्रकाशतिरोधानं नाम प्रकाशोत्पत्ति प्रतिबन्धः | विद्यमानस्य विनाशो वा |"[2]

दर्शन शास्त्र के विद्वानों के अनुसार शुद्ध ज्ञान स्वरूप, नित्य और सत् परमात्मा कभी भी एक बिना आकर व स्वरूप वाला होता है यदि आपके सिद्धान्त द्वारा ऐसे वह अविद्यायुक्त हो जाता है तो उसका भी तिरोधान नहीं हो सकता | ऐसी अवस्था में बहुत ज्यादा झूठ की तरह रह जाएगी | इसके स्वरूप की उत्पत्ति के रूप में आचार्य रामानुज अविद्या की सत्ता के विषय में तीसरा बोध बताते हैं कि अविद्या का स्वरूप प्राप्त ही नहीं होता, क्योंकि उसको न तो सत्य माना जासकता न ही असत्य | इस विषय में सैद्धान्तिक विचार करें तो इससे शंकर का अद्वैत का सिद्धान्त ही समाप्त हो जायेगा | क्योंकि अद्वैतवादी एक भाव ब्रह्म को हीसत् पदार्थ मानते हैं | अविद्या को सत्य ही नहीं माना जा सकता | जिस चीज की अवस्था के विषय में हमें ज्ञान न हो और कारण भी असत् ही हो उसको मानने पर अनवस्था दोषपूर्ण हो जायेगा | यदि अविद्या के नित्यक्रम होने पर उसके परिहार का त्याग कैसे भी करके सम्भव नहीं होगा इस प्रकार मोक्षादि का प्रश्न भी नहीं उठेगा |

"ब्राह्मणों दोषत्वे सति तस्यानित्यत्वेनानिर्मोक्षश्चस्यात् |

प्रतीतेः सद सद् विलक्षणविषयः सत्यमुपगम्यमाने सर्व सर्व प्रतीते विषयः |"[3]

दर्शन के विषय में शंकराचार्य ने अविद्या को अनिर्वचनीय बताया है | उसका खण्डन करते हुए रामानुज कहते हैं कि संसार में दो ही प्रकार के पदार्थ होते हैं – सत्य और असत्य और किसी भी प्रकार से सत्य व असत्य की अनुभूति के बिना इस संसार में अन्य कोई ज्ञान का विषय उपलब्ध नहीं होता | इसका अभिप्राय यह है कि सदसद् विलक्षण वस्तु की सत्ता में कोई प्रमाण नहीं है | इस प्रकार ही अविद्या की अनिर्वचनीयता को स्वीकार नहीं किया जा सकता है | अगर माने तो इसका अभिप्राय यह है कि संसार की समस्त वस्तुओं की प्रतीति उनकी सदसदाकारा है | अगर हम सदसद् वस्तु को भी सदसद्कारा प्रतीति का विषय मान भी लें तो सम्पूर्ण जगत् की प्रतीति समस्त जीवों का विषय बन जायेंगी | "सर्वं हि वस्तु जात प्रतीति व्यवस्थापरम् | सर्वा न प्रतीतिः सदसदाकारा | सदसदा – कारोऽथस्तु प्रतीतेः सदसद् विलक्षण विषय सत्यमुपगम्यमाने सर्व सर्व प्रतीते विषयस्य |

इस प्रकार विरोधाअभिव्यक्ति हेतु पर्याप्त विरोध आजायेगा |

अतः सदसद् विलक्षण वस्तु की कल्पना ही असम्भव है | श्रीमद्भागवत गीता में भी कहा गया है सत् की कभी कमी नहीं होती और असत् कभी सामने नहीं आता (प्रतीत, दिखाई) आचार्य रामानुज के अनुसार अविद्या की असिद्धि में पांचवाँ हेतु उसकी सत्ता का किसी प्रमाण के द्वारा सिद्ध न होना है | सदसद् विलक्षण अविद्या की सत्ता का या असत्ता का साक्षात्कार हमें कभी भी प्रत्यक्ष के द्वारा नहीं होता और न किसी भी अनिर्वचनीय पदार्थ का प्रत्यक्ष किया जाता है | अविद्या को न तो लिंग में परिभाषित कर सकते हैं न ही धर्म के अनुरूप अतः इसका अनुमान नहीं किया जा सकता | अगर इसका अनुमान या प्रमाण के द्वारा भी श्रेय नहीं और न ही शास्त्रों के शब्द प्रमाण के द्वारा ऐसी सदसद् विलक्षण अविद्या का बन्धन किया गया है | धर्मशास्त्रों में माया शब्द का प्रयोग तो अवश्य हुआ है, किन्तु उसका तात्पर्य वहाँ नित्य स्थायी अविद्या न होकर ईश्वर की अद्भुत शक्ति से है |

[2]श्रीभाष्य, अविद्याभंग
[3]श्रीभाष्य, अविद्याभंग

आचार्य रामानुज के अनुसार अद्वैत वेदान्त का यह सिद्धान्त कि सृष्टि के अनुसार निर्विशेष ब्रह्म के ज्ञान से अविद्या की त्रिवृत्ति होती है | सर्वथा असंगत है | बिना गुणवाला और बिना महत्व का ज्ञान रामानुज के अनुसार सर्वथा असम्भव है | अमूर्त स्वरूप भाषात्मक ज्ञान के द्वारा अविद्या रुपी जो एक ठोस यथार्थता है, उसका विनाश नहीं हो सकता |

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्ण तमसः परस्तात् ..... नाऽन्यः, पन्था विद्यतेऽनाय विप्रासदिविशिष्ट विषय ज्ञान के ही मोक्ष का उपाय बताने वाली इस निर्विशेष ज्ञानं को ये तथा अन्य श्रुति वाक्य विरोधी है | ब्रह्म का गुणोरहित या विशेषताओं सहित होने के कारण समस्त श्रुति वाक्य सगुण ब्रह्म ज्ञान से ही मोक्ष की सिद्धि का प्रतिपादन करती है |

"सदसद् विलक्षणं च व्याप्ति विरोधाद्नुपपन्न |[4]

श्रीभाष्य, अविद्याभंग

ब्राह्मणः सविशेषत्वादेव सर्वाण्यपि वाक्यानि सविशेषाज्ञानादेव मोक्षं वदन्ति |[5]

निर्विशेष ब्रह्म ज्ञान से कथमपि अविद्या निवृत्ति आचार्य रामानुज के मतानुसार नहीं है | जीवात्मा को ब्रह्म का अभेद्य ज्ञान होने पर अविद्या से छुटकारा मिल जाता है और इस अभेद ज्ञान से मोक्ष हो जाती है | ऐसा अद्वैतवादियों का मत है | आचार्य रामानुज के मत अनुसार यह बात भ्रामक है | क्योंकि बन्धन पारमर्थिक इसलिए उसकी निवृत्ति इस तथा कथित निवर्तक ज्ञान के द्वारा सम्भव नहीं है |
"बन्धस्य पारस पार्थिक त्वेन ज्ञाननिर्वृत्यत्वा भावात्"[6]
पुण्य कर्मों के स्वरूप देवादि के शरीर में प्रवेश करने से होने वाले छुआ छूत का अनुभव रूप बन्धन को मिथ्या नहीं कहा जासकता | इस प्रकार के बन्धन से छुटकारा (निवृत्ति) आचार्य रामानुज के मत के अनुसार भक्ति सम्बन्धित उपासना के द्वारा प्रसन्न परम पुरुष के अनुग्रह से ही उपलब्ध है |
अविद्या मात्र की निवृत्ति से नहीं | इसके अलावा अद्वैतवाद के अनुसार ब्रह्म के अतिरिक्त सब मिथ्या है | इसलिए अविद्या निवृत्ति रूप ज्ञान भी ब्रह्मातिरिक्त होने से अविद्या रूप मिथ्या ही होगा | अद्वैतवादी तर्क करते हैं कि यह अभेद ज्ञान ज्ञान अग्नि, पिण्ड की भांति अज्ञ को जलाकर तथा स्वयं को भी जलाकर समाप्त कर देता है | इस का अर्थ यह हुआ जीवात्मा द्वारा ब्रह्मैक्यज्ञान अविद्या को समाप्त कर उसमें व्याप्त जीवभाव को भी समाप्त कर देता है और यह परब्रह्म में नित्य निहित हो जाता है | किन्तु रामानुज इस बात को स्वीकार नहीं करते उनका कहना है | जिस प्रकार वन के जल जाने पर अग्नि पिण्ड की राख उस वन व अग्नि – पिण्ड की द्योतक रह जाती है | उसी प्रकार इस अविद्या रूप जली हुई राख के कारण मोक्ष फिर भी अप्राप्त रह जाता है |
अतः अविद्या निवृत्ति रूप ब्रह्मैक्य ज्ञान मात्र से मोक्ष कैसे भी सम्भव नहीं है | फलस्वरूप अविद्या की निवृत्ति भी नहीं हो सकती |[7]

[4]श्री भाष्य अविद्या भंग गीता – 2.16
[5]श्रीभाष्य, अविद्या भंग

[6]श्री भाष्य
[7]तत्व मुक्ताकलाप, 3:28

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1. ब्रह्मसूत्रं श्रीभाष्य भंग – रामानुजाचार्यः चौखम्बा संस्कृत अकादमी वाराणसी 2000
2. श्रीमद्भागवद् गीता – गीताप्रेस गोरखपुर 2020
3. तत्वमुक्ताकलापः
4. तत्वबोधः – शंकराचार्यः सेन्ट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट मुंबई 2019
5. श्वेताश्वरोपमिषद् भाष्य – रामानुजाचार्यः | चौखम्बा संस्कृत अकादमी 2000